वा. मेरुनन्दनगणि - विरचित 'गौतम स्वामि - छन्दांसि'
(एक उत्तरकालीन अपभ्रंश रचना)

- सं. पं. शीलचन्द्रविजय गणि

वाचक मेरुनन्दन कृत गौतमस्वामीनी छंदोबद्ध रासकृति अहीं प्रस्तुत छे. तेनी भाषा उत्तरकालीन अपभ्रंश छे. २२ कडीओमां पथरायेली कृतिनी प्रस्तावना बांधतां प्रथम दोहामां कवि कहे छे तेम, आ कृतिमां ८ छंद, १० दूहा, १ षट्पद-छप्पय अने २ अडिल्ला छंद छे. तेनुं वर्गीकरण आ प्रमाणे छे :-

प्रारंभ कडी दूहा छंदमां छे. ते प्रस्तावना रूप होईने गणतरीमां न लेतां कडी ३ थी १२ - एम १० दूहा छे. २ तथा १३ ए बे चतुष्पदी अडिल्ला छे. १४ थी २१ - ए ८ छंद छे. ज्यारे छेल्ली -२२मी कडी ते छप्पय छे. जेने 'छन्द' नाम आप्युं छे ते चरण दीठ २९ मात्रानो कवित छंद छे. छप्पय बे घटकनो बनेलो छे : वस्तुवदनक (प्रत्येक चरणमां २४मात्रा) + कर्पूर (प्रत्येक चरणमां १५+१३ मात्रा).

रचना अप्रगट छे. सरल तथा रोचक छे. गौतमस्वामीने लक्ष्यमां राखीने थयेली गुर्जर-अपभ्रंश रचनाओ अतिअल्प मळे छे, ते दृष्टिए आ कृतिनुं मूल्य वधारे गणाय. संभवतः १६मा शतकनी लखायेली एक प्रतिना आधारे आ छंदकृति संपादित करवामां आवी छे. कृतिगत अंको वारंवार बदलातां होवाथी - एकसूत्रता जाळववाना आशयथी आरंभे सळंग पद्य क्रमांको लखी उमेर्यां छे. प्रांते कठिन लागे तेवा शब्दोनो कोश मूक्यो छे.

*

श्रीमेरुनन्दन-विरचितानि
श्रीगौतमस्वामि-च्छन्दांसि ॥

अट्ठ छंद दस दूहडा छपदु अडिल्ला दुन्नि ।
जे निसुणइं गोयमतणा ते परिवरीयइं पुन्नि ॥१॥

मंगल-कमल-विलास-दिणिंदह, पढमसीसु पहु वीरजिणिंदह ।
सयल-संघ-मण-वंछिय-दायकु, वन्निसु सिरिगोयमु गणनायकु ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नायक त्रिहुं भुवणहतणा जोयइं जासु पसाउ ।
इक्क जीह किम वन्नियइ सो **गोयमु** गणराउ ॥३॥

तहवि सु गणहरु संथुणवि पामिसु निम्मल बुद्धि ।
जसु सामिय नामग्गहणि फुरइं अचिंतिय सिद्धि ॥४॥

होइ सु नरु कविचक्कवइ, लच्छि-सरस्सइ-कंतु ।
जो आराहइ इक्क-मणि **इंद्रभूति** भगवंतु ॥५॥

सिरि-**गोयम-गणहरु** जयउ बहुविहलद्धिसमिद्धु ।
सयल-सूरि-चूडा-रयणु जिणसासणि सुपसिद्धु ॥६॥

कज्जारंभिहिं जे भविय **गोयमु** चित्ति धरंति ।
ते गलहत्थिय दुरियभरु दुत्तरु झत्ति तरंति ॥७॥

सिरि**गोयमगुरु**-पय-कमलु हियइ-सरोवरि जाहं ।
बालक जिम रंगिहिं रमइं नवनिहि अंगणि ताहं ॥८॥

जे गुणियण नियमणि धरइं अहनिसि **गोयम**-झाणु ।
ते रायहं मंदिरि लहइं सिरि सोहग्गु संमाणु ॥ ॥९॥

प्रह उट्ठवि भाविहिं भणइं जे **गोयम**-गुरु-नामु ।
ते धणु भोयणु पंगुरणु पामइं मण-अभिरामु ॥१०॥

इणि भवि परभवि भवियजण पामिय सुक्ख-सयाइं ।
भवसायरु लीलइं तरइं **गोयम**-पाय-पसाइं ॥११॥

गोयमसामिउ मइं थुणिउ इम गरुयउ गुणवंतु ।
संघ-**मरु-नंदण**-वणिहिं सुरतरु जिम जयवंतु ॥१२ दूहा ॥ ता ।

सुरतरु जिम जयवंतु महावणि, सुरभंडारि जेम चिंतामणि ।
दिणमणि जिम सोहइ गयणंगणि, तिम जिणसासणि **सिरि-गोयम-गणि** ॥१३॥

सिरि-गोयम-गणि तिम जिणसासणि सोहइ जिम निसि चंदु ।
वस-गुब्बस-गामि मगह-महि-मंडलि बंभ-वंस आणंदु ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहुवी-सुह-कुच्छि कंति-कुल-पिच्छल निम्मल-रयण-समाणु ।
भूदेव-देव-**वसुभूइ**-सुनंदणु चउदस-विज्जा-जाणु ॥१४॥

जो जन्तु करंतउ पिक्खि तुरंतउ गयणंगणि सुरसत्थु ।
सव्वन्नवाइ-रोसारुणु चल्लिउभद्दु उप्पाडवि हत्थु ॥

विम्हियमणु समवसरणि पडिबोहिय मिलिय-सुरासुर-इंदि ।
सो पंचसयहं सउं दिक्खिउ **गोयमु** गणहरु वीरजिणिंदि ॥१५॥

जो कंचण-कमल-विमल-कोमल-तणु सत्त-हत्थ-सुपमाणु ।
तिहुयण-जण-वयण-नयण-मण-मोहण-लवणिम-रूव-निहाणु ॥

जिणि बिहुं उपवासिहिं नितु पारंतइ लद्धिय-लबधि अपार ।
सो **अगनिभूति**-बंधवु **गुरुगोयमु** मनि समरउं सविचार ॥१६॥

जो कामकुंभ-सुरधेणु-सुरद्दुम-सुरमणि दाणि पहाणु ।
जिणि अप्प-कन्हइ अणहूंतउं अप्पिउ घण-जण-केवल-नाणु ॥

जिणि निय-गुरु-निवड-नेहि अवगन्निय केवल-सिरि-वर-नारि ।
तसु **गोयमसामि**-समउ गुरुभत्तिहिं कवणु भणउं संसारि ॥१७॥

जो **नियबलि** जिण चउवीसइ वंदइ चरमसरीरी इत्थ ।
इय जिणदेसण सुरवयणि सुणेविणु फलु **अट्ठावय-तित्थ** ॥

आलंबवि सहसकिरण-कर-तंतुय चडियउ **गिरि कैलासि** ।
अच्चब्भुय-चरिउ रहिउ सो गणहरु इक्क रयणि तिणि वासि ॥१८॥

भरहेसर-चक्काहिव-निम्मिय निय-निय-वन्न-पमाणि ।
जिण वंदिय वलतइ खीर-खंड-घिय-भोयणु इच्छ-पमाणि ॥

अंगुट्ठउ ठविय पनरसइ तावस कारिय इक्कइं ठामि ।
अखीण-महाणसि-लद्धि-समिद्धउ जयउ सु **गोयमसामि** ॥१९॥

परवाइय-मयगल-माण-मडप्फर-मोडण-केसरिराउ ।
सिरि-**वायभूइ**-गणहारि-सहोयरु सचराचरि विक्खाउ ॥

जो केवलकज्जि करंतउ आडउ गुरुअग्गइ जिम बाल ।
तिणि कत्तिय-मास-अमावसि परणीय केवल लच्छि विसाल ॥२०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोहणगिरि रयण, गयणि तारायणु, सायरि जल-कण-संख ।
जो मुणइ वियक्खणु सो वि न सक्कइ जसु गुण भणिउ असंख ॥

सो सिद्ध-बुद्ध सिरि-**गोयमसामिउ** संपत्तउ सिवरज्जि ।
मइ वन्निउ किं पि **मेरुनंदण** थिर निय-मण-वंछिय-कज्जि ॥२१॥

निय-मण-वंछिय-कज्जि नमइं जसु सुर-नर-किंनर
इंद-चंद-नागिंद-असुर-विज्जाहर-मुणिवर ।

उच्छव मंगल रिद्धि विद्धि जसु नामि पयासइं
रोग-सोग-दोहग्ग-दुरिय दूरंतरि नासइं ॥

सो **वीरसीसु** सूरीसवरु महिम-गरिम-गुणि **मेरुगुरु** ।
सिरि **गोयमगणहरु** जयउ चिरु सयलसंघ कल्याण करु ॥२२॥

इति श्री गौतमस्वामिच्छंदांसि ॥

— x —

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"गौतमस्वामिच्छंदांसि" गत कठिन शब्दो

१/४	परवरीयइं पुत्रि	पुण्यथी परिवरे, वधे.
२/४	गणनायकु	गण(गच्छ, मुनिसमुदाय)ना नायक
३/४	गणराउ	गणराज-गणना राजा
४/१	गणहरु	गणधर (तीर्थंकरना मुख्य शिष्य)
५/२	कंतु	कांत-प्रिय
६/२	लद्धिसमिद्धु	लब्धि-समृद्ध; (लब्धि-विशिष्ट शक्ति)
७/१	कज्जारंभिहिं	कार्यारंभे
७/१	भविय	भव्य (-जन)
७/३	गलहत्थिय	गळे झालीने काढी मूकीने
७/३	दुरियभरु	दुरित वृन्द
७/४	दुत्तरु	दुस्तर
७/४	झत्ति	शीघ्र
९/२	झाणु	ध्यान
१०/३	पंगुरणु	पांगरण-कपडां वगेरे
११/२	सुक्खसयाइं	सौख्यशत-सेंकडो सुखो
१४/३	पिच्छल्ल	सुंवाळुं, लीसुं, चमकतुं
१५/१	जन्नु	यज्ञ
१५/१	सुरसत्थु	सुरसार्थ - देवोनो समूह
१५/३	सव्वन्नवाइ	सर्वज्ञवादी (पोताने सर्वज्ञ मानतो)
१५/४	उप्पाडवि	ऊंचो करीने
१७/३	समवसरणि	समवसरण - तीर्थंकरनी धर्मसभा
१६/१	सत्तहत्थ सुपमाणु	सात हाथ ऊंची कायावाळा
१६/३	पारंतइ	पारणां करतां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६/३	लद्धिय	प्राप्त करी
१७/३	निवड	निबिड
१८/१	चरमसरीरी	जेनो अंतिम जन्म छे ते; हवे पछी अजन्मा
१८/२	अट्ठावयतित्थ	अष्टापदतीर्थ
१८/३	कर-तंतुय	(सूर्य-) किरणरूपी दोरी
१८/४	अच्चब्भुयचरिउ	अति-अद्भुत चरित्र वाळा
१८/४	वासि	निवास माटे
१९/१	चक्काहिवनिम्मिय	चक्रवर्तीए निर्मेल
१९/१	वन्न-पमाणि	वर्ण (रंग) प्रमाणे
२०/१	परवाइय-मयगल	परवादी रूप हाथी
२०/१	मडप्फर	गर्व, दर्प
२०/१	आडउ	हठ
२०/४	केवललच्छि	केवलज्ञाननी लक्ष्मी
२१/३	सिवरज्जि	शिव(मोक्ष)नुं राज्य

— X —

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org